

सपाली

सपाली ने अपने चोटी बने हुए बालों में बिना छिलके वाले चावल के दाने छिपा दिए। उसकी दूरदर्शिता ने दक्षिण अमेरिका के उत्तरी तट पर एक डच कॉलोनी, सूरीनाम के जंगल में बागान अर्थव्यवस्था के बाहर जीवित रहना संभव बना दिया।

गुलामी से मुक्त होने वाले लोगों को मरून कहा जाता है। उन्हें कठिन परिस्थितियों में जंगल में जीवित रहना पड़ा जहां उन्होंने अपने खुद के समाज स्थापित किए। डच कॉलोनियल शासन ने सदियों तक उनके अस्तित्व के लिए खिलाफ संघर्ष किया। जब यह क्रूर बल के साथ सफल नहीं हुआ, तो डचों ने शांति संधियों के माध्यम से मरूनों को अपने अधीन करने का प्रयास किया।

सपाली जैसी महिलाओं ने मरून समाजों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे फसल उगाने और खाद्य आपूर्ति के निर्माण के लिए जिम्मेदार थे। ओकानिसी मरून सपाली के प्रत्यक्ष वंशज हैं। वह उनकी कहानियों, गीतों और आध्यात्मिकता में और उनके नाम पर रखे सपाली चावल में रहती है। हालाँकि हम कभी नहीं जान पाएंगे कि सपाली कैसी दिखती थी, उसकी उपस्थिति चावल के माध्यम से स्पष्ट है।

सूरीनाम के नक्शे का विवरण: मरूनों को अपने गांवों की रक्षा करने या भागने के लिए मजबूर किया गया, अलेक्जेंडर डी लावॉक्स, 1737।

भारी हथियारों से लैस कॉलोनियल सैनिक मरूनों की तलाश में, जी. डब्ल्यू लक, c. 1773-1777

सूरीनाम के एक नक्शे का विवरण: भागती हुई महिलाएं, उनके आवरण से पहचानी जा सकती हैं, उनमें से दो अपने साथ सामान ले जा रही हैं, अलेक्जेंडर डी लावॉक्स, 1737।

चावल का डंठल माँ सापा या सपली।

1817 से पहले सूरीनाम में मैरून द्वारा बनाई गई हड्डी की कंघी।

1883 से पहले, लौकी से ओकानिसी महिलाओं द्वारा बनाए गए चावल के चम्मच।